हमारी अधूरी प्रेम कहानी

(पुस्तक के कुछ अंश)

"तो खुश तो हो ना तुम"

"हम्म्म और तुम?"

"वैसा ही जैसा तुम तब छोड़ कर गई थी बिल्कुल वैसा ही।"

कुछ पल के लिए हमदोनो खामोश हो जाते हैं।

थोड़ी देर सन्नाटे को तोड़ने की कोशिश करते हुए उसने कहा-

"तो तुमने अब तक शादी क्यों नहीं की?"

"तुम जैसी मिली नहीं फिर?" इस बार मेरी आवाज में भारीपन था।

इस बार फिर से सन्नाटा छा जाता है।

ममता- "देव मैं तुम्हारे भावनाओ की कद्र करती हूं। तुम्हें पता है न अब वो नहीं हो सकता जैसा तुम सोच रहे हो। ये समाज क्या कहेगा?" आगे............

"तो खुश तो हो ना तुम"

"हम्म्म और तुम?"

"वैसा ही जैसा तुम तब छोड़ कर गई थी बिल्कुल वैसा ही।"

कुछ पल के लिए हमदोनो खामोश हो जाते हैं।

थोड़ी देर सन्नाटे को तोड़ने की कोशिश करते हुए उसने कहा-

"तो तुमने अब तक शादी क्यों नहीं की?"

"तुम जैसी मिली नहीं फिर?" इस बार मेरी आवाज में भारीपन था।

इस बार फिर से सन्नाटा छा जाता है।

ममता- "देव मैं तुम्हारे भावनाओ की कद्र करती हूं। तुम्हें पता है न अब वो नहीं हो सकता जैसा तुम सोच रहे हो। ये समाज क्या कहेगा?"

मैं- "इस समाज की वजह से ही तो मैं आज तक चुप रहा लेकिन ममता मैं अब तुम्हें इस हाल में नहीं देख सकता।

आखिर इस समाज ने हमारे लिए किया क्या है सिवाय तुम्हारी ज़िन्दगी में जिल्लत देने के। मत भूलो ये वही समाज है जिसने तुम्हारी फूल सी ज़िन्दगी में ज़हर घोल दी है।"

इतना कहते ही थोड़ी देर फिर खामोशी छा जाती है और हम अब एक दूसरे की आंखों में देख कर सवाल जवाब कर रहे थे।

"सर हियर इज योर कॉफिचिनो एंड डूनट्स" वेटर ने हम दोनों का ध्यान तोड़ा। मैंने कॉफिचिनो ममता की तरफ बढ़ाते हुए कहा- "ये लो तुम्हारी फेवरेट। किसी समय तुम्हारी यह फेवरेट होती थी।"

"तुम्हें अभी तक याद है मेरी पसन्द।" ममता ने जिज्ञासु की भांति यह प्रश्न किया था।

"अरे तुम्हें मिले हुए 5 साल 11 महीने हो रहे होंगे, लेकिन तुम मेरी यादों में हमेशा साथ थी।"

मेरे ऐसा कहते ही, इस बार ममता ने धीमी सी एक जादुई मुस्कान दी। उसके इस मुस्कान से उस कॉफी में भी स्वाद बढ़ा दिया था।

ममता के साथ बिताए हुए अनमोल पल और उसकी यादों को ताजा करने के लिए मैं लगभग पिछले 6 सालों से कैफीचिनो पी रहा हूँ और पीते पीते मैं कब इसका आदि हो गया इसका मुझे आज तक अंदाजा नहीं हुआ।

कॉफी पीते पीते हम एक दूसरे की आंखों में फिर से खो गए और खोते - खोते 9 साल पहले चले गए।

"ओ हेलो मिस जब भगवान ने आंखें दी है तो उसको खोलकर चलो।" लाइब्रेरी में एक लड़की मुझसे टकरा गई थी।

"अरे हद है इसे तो लड़कियों से बात करने की तमीज़ ही नहीं है।" एक अजनबी लड़की ने अपनी साथ की फ्रेंड से कहा।

"जब चलने की तमीज़ नहीं है तो क्यों चलती हो?"

मैंने इस बार थोड़ी तेज आवाज में कहा था।

"जब आपको बात करने की तमीज़ नहीं तो मुंह क्यों नही बन्द रखते?" इस बार इस लड़की ने मुंह बनाते हुए कहा था।

उसकी दोस्त- "अरे इसके मुंह मत लग! ये बहुत ही अकड़ू है। पता नहीं किस चीज़ की अकड़ है उसे?"

उसकी दूसरी फ्रेंड-"अरे चल यहां से बवाल मत कर! यहां लाइब्रेरी है, लोग हमें ही देख रहे हैं। यहाँ डिस्टर्ब हो रहे सभी।

यह कहकर वो लोग वहां से निकल लेते हैं।

मैं लाइब्रेरी में कुछ वक्त बिताने के बाद कैंटीन की तरफ रुख कर देता हूँ। मैं और मेरे तीनो मित्र एक कैंटीन में खाली जगह पर बैठते हैं। हम चारो ने कोल्ड ड्रिंक और बर्गर खाने को एकमत हुए। रोहित आर्डर कर के आ जाता है। काफी देर के बाद जब कैंटीन वाला हमारे आर्डर को ले कर नहीं आता तो यशवीर बोलता है-" भाई देव 11:40 हो गए हैं 11:50 से छिब्बर सर की इम्पोर्टेन्ट टॉपिक "बम कैलोरीमीटर" पर लेक्चर भी है, टाइम से नहीं गए तो बाहर ही खड़ा रहना पड़ेगा। जरा तू खुद जा कर आ शायद बन गए हों!" मैं अपनी जगह से उठा और रोहित को अपने साथ कैंटीन वाले अंकल सामने खड़ा हो जाता हूँ।" कैंटीन वाले अंकल जिनका नाम विनोद सूरी था उन्होंने 4 बर्गर ओवन से निकाला और अभी अभी आई एक लड़की को देने लगे, मैंने तभी सूरी अंकल के हाथ से झपटते हुए ले लिया और कहा-"पहले हमने आर्डर किया था।"

सूरी अंकल बोले- "बेटे वो लड़कियां है उन्हें दे दो, उन्हें थोड़ी देर में क्लास में जाना है।"

मैंने बिना जवाब दिए बर्गर को उनसे लेकर अपनी जगह पर आ बैठता हूँ। तब तक रोहित भी कोल्ड ड्रिंक्स ले कर पहुँच जाता है।

जैसे ही मैं बर्गर की पहले बाईट लेने जा रहा था तभी किसी ने मेरा हाथ पकड़ लिया और एक बुलन्द आवाज आई।

"ओ हेलो मिस्टर ये बर्गर हमारा है। इसे चुप चाप हमारे हवाले कर दो।" उसकी बात में घमंड के साथ साथ नसीहत ज्यादा लगी। जब मैंने नजर उठा कर देखा तो वही लड़की थी जो अभी थोड़ी देर पहले लाइब्रेरी के अंदर मुझसे टकराई थी। मैं अपनी जगह पर खड़ा हो गया और उस लड़की से बोला- "इसे हमलोगों ने पहले आर्डर किया था तो पहले हमारी हुई।

"मुझे तुमलोगो की तरह यहां बैठ कर टाइमपास नहीं करना है, मुझे थोड़ी देर में क्लास में जाना है।" उसने फिर अकड़ कर जवाब दिया था।

"ओ हेलो तुम क्लास करो न करो इस से हमे फर्क नहीं पड़ता, ये बर्गर तो हमारा ही है चाहे जो भी कर लो।" यह कहते ही मैंने बर्गर पर अपने दांत गड़ा दिए। तभी उसकी बाकी की सहेलियां आ गई और उसको समझाते हुए ले गई कि इस से मत उलझ ये किसी की नही सुनता। ये अपनी धुन में ही रहता है।

थोड़ी देर में हमलोग अपने क्लासरूम की तरफ निकल लिए। ठीक 11:55 पर क्लासरूम के बाहर खड़े थे, दरवाजे को खटखटाने के बाद हमे अंदर आने दिया गया।

सामने ब्लैक बोर्ड पर टाइप्स ऑफ लुब्रिकेशन देख कर मैं बोल पड़ा-" अरे यार फिर से लुब्रिकेशन!"

छिब्बर सर इस महीने में चौथी बार पूरी क्लास में लुब्रीकेंशन पर लेक्चर दे रहे थे। इसका मतलब जरूर कोई नया स्टूडेन्ट आया है। जब भी क्लास में अगर एक भी स्टूडेंट नया आता तो वो लुब्रिकेशन वाले चैप्टर को फिर से पढ़ाने लग जाते थे। अब हमलोग मन मारकर चुप चाप सामने की तरफ देख रहे थे तभी अचनाक छिब्बर सर (जिनकी उम्र लगभग 62 वर्ष थी) पढ़ाते पढ़ाते

जोर जोर से सांसे लेने लगे और अपनी जेब से एक छोटी सी स्प्रे निकाली और मुंह मे दो बार मार कर वापिस जेब मे रख ली। वो दमा के मरीज थे, ऐसा वो अक्सर करते थे।

तभी मैंने बोला-"अरे बूढ़ा हांफने लगा।" मेरी बात सुनकर मेरे दोस्त और क्लास के अन्य लोग भी अचनाक हंस पड़े। हमारे पीछे बैठी लड़की भी जोर जोर से हंस पड़ी थी, उसकी हंसी रुकने का नाम ही नही ले रही थी। तभी छिब्बर सर हमलोगों की तरफ आए और उस लड़की के पास गए और बोले- "क्या हुआ क्यों हंस रही हो? उनके ऐसा बोलने के बाद भी वो लड़की अपनी हंसी को धीरे धीरे नियंत्रण में कर रही थी, तभी छिब्बर सर ने कहा कि-" अरे डरो नही। मुझे भी बता दो, ऐसी कौन सी बात थी? मैं भी हंस लूंगा! मैं भी तो तुम्हारे दोस्त जैसा ही हूँ।"

उनका यह कहना ही था कि वो लड़की अब अपनी हंसी पर नियंत्रण नहीं रख सकी और जोर जोर से हँसने लगी। उसके साथ साथ सारा क्लास हंस रहा था। मैंने पीछे मुड़ कर देखा तो ये वही लड़की थी जिससे मेरा आमना-सामना आज दो बार हो चुका था।

छिब्बर सर दुबारा अपनी जगह पर गए और पढ़ाने लगे।

क्लास खत्म होते ही थोड़ी देर में लंच हुआ।

मैंने अपना टिफिन खोला और खाने में लग गया। मेरे पीछे वो नई अजनबी लड़की भी खाने में लगी हुई थी, उसके साथ उसके साथ उसकी दो सहेलियां भी उसका लंच को खत्म करने में उसका सहयोग कर रही थी। तभी वो धीरे से फुसफुसाती हुई बोली-

"क्लास में हर कोई अपना अपना एक ग्रुप में बना के लंच कर रहा है, ये अकेला ही क्यों खा रहा है?" उसका इशारा मेरी तरफ था। उसके साथ लंच कर रही किसी एक ने कहा-"अरे ये हर चीज़ में शेयरिंग कर सकता है लेकिन लंच अकेले ही करता है हमेशा। पता नही क्यों! शायद उसे किसी का जूठा पसन्द नहीं।"

शाम को छुट्टी हुई और मैं कॉलेज बस में रोहित के साथ बैठ गया। बाकी के मेरे दोस्त अपनी बाइक से ही कॉलेज आते थे और मैं कॉलेज बस से। शनिवार की शाम को कॉलेज से घर

जाते अजीब सा सुकून मिलता है जैसे कोई फौजी बहुत सालों बाद अपने बीवी बच्चों के पास घर जा रहा हो। करीब 50 मिनट में ही मैं अपने घर था। कॉलेज मेरे घर से ठीक 25 की.मी. पड़ता था। कॉलेज शहर के बिल्कुल बाहरी इलाके में पड़ता था।

दो दिन बाद जब सोमवार को कॉलेज पहुँचते हैं तो दोस्तो से मिलने की अजीब सी ललक होती है। लंच से पहले तक सभी हर दिन की तरह एनरजेटिक(ऊर्जावान) होते हैं लेकिन लंच के बाद पता नहीं क्यो सुस्ती सी घिर जाती है। बहरहाल लंच हो गया था और मैं लंच कर रहा था। मेरे बाकी तीनो दोस्त असाइन्मेंट बनाने के लिए व्हाइट शीट लेने कॉलेज की कैंटीन की तरफ गए थे। जैसे ही मैंने लंच खत्म किए वैसे ही थोड़ी देर में मेरे बाकी के तीनों दोस्त आ गए और उन्होंने मेरे बैग से मैकेनिकल इंजीनियरिंग का असाइनमेंट निकाला और लगे छापने।

असाइनमेंट करते देख एक उस अजनबी फ्रेंड की एक फ्रेंड ने कहा-"अरे मैं तो भूल गयी आज तो मैकेनिकल इंजीनियरिंग की असाइन्मेंट जमा करने की अंतिम तिथि है। ओह्ह मुझे तो याद ही नही रहा।"

उस अजनबी लड़की ने कहा-" अरे हाँ कल विवेक पाण्डेय सर ने कहा था कि आज लंच के बाद वाले लेक्चर तक जमा करने होंगे, नहीं तो इंटरनल बैक की भी धमकी दी थी। ओह्ह अब क्या होगा।"

तभी हमारी क्लास की एक लडक़ी जिसका नाम मिताली था उसने कहा-" ओह! अब क्या होगा? मैंने भी नहीं किए हैं।"

उस अजनबी लड़की ने कहा-" अरे अभी तो इस सेमेस्टर की कुछ बुक्स मिली भी नहीं हैं, अब क्या होगा?

तभी चैत्रा ने कहा- "ऐसी विकट परिस्थिति में तो अब एक ही इलाज है औऱ वो है देव!

सिर्फ़ ये ही बन्दा है जो हमे बचा सकता है?"

उस अजनबी लड़की ने कहा-"भला ये कैसे?"

चैत्रा ने कहा- "अरे इस बन्दे की यही तो ख़ासियत है कि ये कोई सा भी असाइन्मेंट हो सबसे पहले करता है और जमा भी सबसे पहले कर देता है।"

उस अजनबी लड़की ने फटाफट अपना टिफ़िन खत्म किया और मेरे पास आ कर बोली -" ओ हेलो देव! कुड यू गिव मी योर मेकैनिकल असाइनमेंट प्लीज।" उसने प्लीज कहने में ज्यादा जोर दिया था औऱ प्लीज को रबर की तरह लम्बा खींचा था बोलते वक़्त। मैंने मोहित के सामने से अपना असाइनमेंट उठाया और उस अजनबी लड़की को बढ़ाते हुए बोला- "या स्योर, व्हाय नॉट।"

उसने थैंक्स कहा और वो उस असाइनमेंट को ले कर चली गई और उसी क्लास के एक कोने में बैठ कर कॉपी करने लगी।

मेरी अचनाक इस हरकत से मोहित, यशवीर और रोहित बड़े ध्यान से देख रहे थे। मोहित अपने दोनों हाथों को उठता हुआ बोला-

" भाई हमे तो कर लेने दिया होता कॉपी, इतनी जल्दी क्या थी उसे देने में।"

यशवीर-" क्या हो गया लड़के तुझे? तू ठीक तो है ना?"

रोहित- "मुझे तो लगता है कि अपना लड़का गया काम से।"

उसके ऐसा कहते ही वो तीनों ठहाके लगा कर हंस पड़े।

विवेक पांडे ने अपना लेक्चर खत्म किया और उसके बाद सबसे असाइनमेंट लेने लगा। जब उस अजनबी लड़की ने जमा किया तो वो मेरी तरफ देख रही थी, उसकी आँखों को देख कर ऐसा लग रहा था जैसे मुझे फिर से थैंक्स कह रही हो और मेरा आभार जताना चाह रही हो। छुट्टी होते ही मैं बस की तरफ चल पड़ा। बस में पहुँचते देखा मैंने की वो अजनबी लड़की भी उसी बस में विंडो सीट के पास ही बैठी है। उसके पास वाली सीट खाली थी लेकिन मैं उसके पीछे बैठ गया क्योकिं कॉलेज से घर जाते वक्त मुझे भी विंडो सीट ही प्यारी है। घर जाते हुए यहां से बाहर का नजारा देखने मे बड़ी ही सुखद अनुभूति होती है। जब खिड़की से ठंडी ठंडी हवा तन को छूती है तो मन को बहुत सुकून मिलती है और कुछ हद तक दिन भर की थकान को भुला देती है।

मेरी आदत नोटिस बोर्ड (सूचना पटल) की तरफ जाने की नहीं था। समय सारणी में बदलाव हुआ था। आज कुलदीप रावत सर का लेक्चर था और वो क्लास में आए थे। उनकी सबसे बड़ी खासियत यह थी कि जो वो सब्जेक्ट पढ़ाते थे उसका नाम था स्ट्रेंथ ऑफ मैटेरियल्स, जिसमे 75 प्रतिशत न्यूमेरिकल्स होते थे, जिन्हें हल करने के लिए हर किसी को साइनटिफिक कैलकुलेटर ले कर आना अनिवार्य होता था। कल अचनाक समय सारणी में बदलाव के कारण मैंने सूचना पटल पर देख नही पाया था। नतीजतन मैं साइनटिफिक कैलकुलेटर ले कर नही आया था। कुलदीप रावत सर जैसे ही कक्षा में आए उन्होंने कहा कि जो जो साइनटिफिक कैलकुलेटर ले कर नहीं आए हैं वो कक्षा के बाहर चले जाएं। हम चारो मित्र बारी बारी से अपनी जगह पर खड़े हो गए और कक्षा के बाहर जाने लगे। जैसे ही मैंने जाने के लिए कदम आगे बढ़ाया तभी किसी ने पीछे से आ कर मेरे हाथ मे वो साइनटिफिक कैलकुलेटर पकड़ा दिया। मैंने पीछे मुड़कर देखा तो वो वही अजनबी लड़की थी जिसने मुझसे मेरा असाइनमेंट मांगा था। मैं कुछ कह पाता उस से पहले वो मुझे साइनटिफिक कैलकुलेटर मेरे हाथ मे थमा कर मुस्कुराते हुए कक्षा के बाहर चली गई। मेरी समझ मे यह नहीं आया कि उसने अपना साइनटिफिक कैलकुलेटर मुझे पकड़ा कर खुद बाहर क्यो हो गई।

रिसेस के वक़्त मैं अपने दोस्तों के साथ कैंटीन गया। हम चारों ने आज मसाला डोसा खाने का मन बनाया। रोहित को आर्डर दिए तकरीबन 15 मिनट से ऊपर हो गया था।

इस बार भी विलम्ब होने की वजह से मैं अपनी जगह से उठा और रोहित के साथ कैंटीन के समक्ष जा कर खड़ा हो गया। सूरी अंकल हमेशा की तरह मसाला डोसा किसी ओऱ को दे रहे थे, इस से पहले वो किसी को देते मैंने हाथ बढ़ा कर उनकी हाथों से ले लिया। मेरे ऐसा करते ही बोल पड़े-"बेटे आज सच मे इस बच्ची ने तुमसे पहले आर्डर किया था।" जैसे ही मैंने पलट कर देखा ये वही अजनबी लड़की थी जिसने थोड़ी देर पहले मुझे अपना साइनटिफिक कैलकुलेटर दिया था। मैंने उस लड़की को वापिस करते हुए सॉरी कहा और उसको देने लगा तो उस लड़की ने वही जादुई मुस्कान देते हुए कहा कि- "ईट्स ओके यू कैन टेक ईट!"

लेकिन मैं वहीं छोड़ कर मुड़ चला और वापिस आ कर अपनी जगह पर बैठ गया। मेरे आते ही मोहित बोला- "अरे गजब 2 साल में पहली बार तू खाली हाथ आया? क्या हुआ?"

मैंने बहाने बना दिया कि सूरी अंकल ने कहा कि अभी बनने में वक़्त है। मेरे ऐसा कहते ही रोहित ने वो सारी बात बता दी जिसकी वजह से मैं खाली हाथ वापिस आया था।

उन तीनों ने मेरी खिल्ली उड़ाई और बोले-"भाई मुझे तो लगता है दाल में कुछ काला है अब!" यह कहकर सभी हंस पड़े। हमलोग फिर अपने क्लासरूम की तरफ बढ़ चले।

छुट्टी होते ही मैं कॉलेज के बस की तरफ चल पड़ा। जैसे ही मैं बस में चढ़ा दरवाजे के पास वाली विंडो सीट उसने खाली छोड़ी थी और उसके बगल में वो अजनबी लड़की बैठी थी। मेरे बस में चढ़ते ही उसने स्माइल दी और बोली-"हेलो देव! प्लीज् सीट हीयर!"

मैं उसके बगल में बैठ गया क्योकि मुझे उस से ज्यादा उस विंडो सीट से ज्यादा लगाव था। मेरे बैठते ही उसने अपनी दाहिनी हाथ को बढ़ाते हुए कहा-" हेलो आई एम ममता उप्रेती फ्रॉम कुमाऊं गढ़वाल।"

मैंने भी अपने हाथ को बढ़ा कर मिलाते हुए बोला-" आई एम देव प्रसाद रतूड़ी फ्रॉम टिहरी गढ़वाल। आई थिंक यू नो अबॉट मी।"

उसने अपने सर को हिलाया और जादुई मुस्कान बिखेर दी।

मैंने थोड़ी देर में अपने ईरफ़ोन्स बैग से निकाले और मोबाइल में लगा कर गाने सुनने लगा। अभी मैंने गाना प्ले किया ही था कि ममता ने मेरे दाहिने कान वाला हेड फ़ोन यह कहते हुए निकाल के अपने कान में लगा लिया-"इफ यू डोंट माइंड, कैन आई जॉइन यू।" मै उसको मना नहीं कर पाया और चुपचाप गाना सुनने लगा।

"पल पल दिल के पास तुम रहती हो.....!"

"वाऊ नाइस सॉन्ग" वो इस गाने की पहली लाइन सुनते ही वो बोल पड़ी।

"हम्म्म ईटस माय फेवरेट सांग!" मैंने धीमी और गंभीर शब्दों में कहा।

" ईट आल्सो वन ऑफ माय फेवरट सांग!" यह कहकर उसने फिरसे वही जादुई स्माइल छोड़ दी।

अगले दिन छिब्बर सर फिर से लुब्रिकेशन वाला चैप्टर पढ़ा रहे थे। लगता है कोई और नया स्टूडेंट (लैटरल एंट्री) आया है। मैंने अपने दोस्तों को कहा और मन मारकर लेक्चर खत्म होने का इंतजार करने लगा। लेक्चर खत्म होते ही लंच हो गया। मैं हमेशा की तरफ अकेले लंच कर रहा था कि तभी अचनाक मैं जहां बैठा था वहां ममता भी अपने लंच बॉक्स ले कर बैठ गयी। मैं इस से पहले कुछ समझ पाता उसने मेरे लंच बॉक्स से आलू पराठें निकले और बोली-"वाऊ आलू के पराठें! आय लव ईट सो मच!!" उसने ये कहा और अपनी बड़ी (न्यूट्री) की सब्जी मेरे लंच बॉक्स में डाल दिया और कहा-"ट्राई ईट, ईट्स सो यमी! मैंने खुद इसे बनाये हैं।"

मैंने कुछ नहीं कहा लेकिन उसने मेरे इतने सालों की आदत को तोड़ दिया, मैंने आज से पहले कभी किसी के साथ नहीं खाया था।

अभी लंच का दौर चल ही रह था तभी मेरे बाकी के तीनों दोस्त भी आ गए। जैसे ही उन तीनों की नजर मुझ पर पड़ी वो एकदम से अपनी जगह पर जम से गए। रोहित अपनी आंखों को मलता हुआ मेरे पास आया और वहां खड़ा हो गया। मेरे बाकी के दोनो दोस्तों ने भी मुझे घेर लिया था। वो तब तक शांत रहे जब तक ममता अपने हाथों को धोने बाहर नही गयी। उसके जाते ही तीनो मेरी ओर झपट पड़े और बोले-" वाह भाई मजनू, तो बात अब यहां तक बढ़ गयी है। साले ने आज तक हमे कभी पानी को भी नहीं पूछा और जनाब अब लड़कियों के साथ लंच फरमा रहे हैं।"

"ममता...ममता नाम है उसका।" मैंने हिम्मत करते हुए कहा। मेरे इतना कहते ही वो हंस पड़े और रोहित बोला- "अच्छा तो भाभी का नाम ममता है।"

"अरे पागल हो क्या मरवाओगे क्या?" मेरा इतना कहना था कि कमीनो ने मेरी ऊपर की जेब से 500 का नोट निकाला और यह कहते हुए कैंटीन की तरफ भाग गए कि भाभी बनने की खुशी में पार्टी तो बनती है। मैं मूक बनकर उन्हें देखता ही रह गया।

15 अक्टूबर का दिन था। दशहरे की छुट्टियों के बाद हम सभी कॉलेज आये थे। थर्ड सेमेस्टर के इंटरनल्स एग्जामस होने वाला थे। हम सभी जोर-शोर से इसकी तैयारियों में लग गए थे। सोमवार का दिन था। परीक्षा सुबह ठीक 9:30 बजे से शुरू होनी थी। स्ट्रेंथ ऑफ मटेरियल्स समझ के बाहर का विषय था। इसलिए रास्ते मे दिखने वाले हर पत्थर, मूरत इत्यादि को प्रणाम करते हम कॉलेज पहुँचे। कॉलेज पहुँचते ही मेरी नजरें मोहित को ढूंढने लगी क्योकि वो एग्जाम से पहले कुछ इम्पोर्टेन्ट टॉपिक्स को अपने तरीके से समझा देता था, जो आसानी से दिमाग मे घुल जाती थी। मैं लाइब्रेरी में जा कर अपने नोट्स उलट पुलट कर ही रह था कि तब तक रोहित वहां आ गया।

"अब तो इम्पोर्टेन्ट बता दे देव!?"

रोहित ने अपने कुछ नोट्स को लाइब्रेरी के मेज पर रखते हुए कहा था और मेरी बगल में बैठ गया।

" मैं तो खुद मोहित का इन्जार कर रहा हूँ कि फटाफट उस से कुछ ऐक्सपेक्टेड टॉपिक्स पर डिस्कशन कर लूं लेकिन वो तो अभी तक आया ही नहीं और हां तुझे क्या बताना है। पूरा के. पी. एच. तो तुम्हारी जेब मे है।"

मैंने स्ट्रेंथ ऑफ मैटेरियल्स की छोटी पतली मॉडल पेपर के बारे में बोल था जो बाजार में आसानी से 35₹ में एग्जामस के वक़्त मिल जाती थी। रोहित को बुक्स की जगह इस मॉडल पेपर पर ज्यादा भरोसा होता था क्योंकि इसमें सेलेक्टेड और ऐक्सपेक्टेड टॉपिक्स होते थे जिसे एग्जाम को मद्देनजर देखते हुए पब्लिशर्स छपते थे। यही एक सबसे बड़ी वजह थी रोहित के लिए की बुक्स से ज्यादा वो इसपर भरोसा करता था।

"भाई पूरी किताब नहीं पढ़नी है। कुछ इम्पोर्टेन्ट ही बता दो ताकि कुछ लिख कर तो आऊँ और पासिंग मार्क्स आ जाये। हम तो 30 मार्क्स ला कर भी खुश रहते हैं मगर इस बात का जरा सा भी अभिमान नहीं करते।" रोहित बिना रुके हुए बड़बड़ाते हुए बोला जा रहा था। तभी मैंने देखा कि मोहित भी कॉलेज पहुँच चुका था। मैंने अपनी जगह से बैठे बैठे ही उसको हाथ उठा कर इशारा किया और वो अगले ही कुछ क्षणों में अंदर आ कर मेरी बगल वाली कुर्सी पर बैठे गया।

"भाई मोहित तू ही आज मेरी लुटिया डूबने से बचा सकते हो। मुझे तुम्हारी तरह पूरी किताब नहीं छाप कर आनी, मुझे बस पांच ऐक्सपेक्टेड टॉपिक्स ही बता दो।" रोहित ने अपने दोनों हाथों को जोड़ते हुए कहा।

"चाटो मत!" यह कहकर मैंने खुद को नोट्स में उलझा लिया।

"जा देव के बच्चे, ये ब्राह्मण तुमको शाप देता है कि बेन्डिंग स्ट्रेस और शियर स्ट्रेस का फार्मूला ही भूल जाओ और तुमसे न्यूमेरिकल्स ना हो पाए। रोहित ने शॉप देने की मुद्रा बनाकर कहा।

परीक्षा से ठीक पहले कोई ऐसी बात कह दे तो आप कितने भी तैयार क्यों ना हों; आत्मविश्वास हिल ही जाता है।

"इस शॉप से कोई कोई युक्ति महाराज।" मैंने बेन्डिंग स्ट्रेस और शियर स्ट्रेस के एक न्यूमेरिकल्स को सॉल्व करके पृष्ठ को पलटते हुए कहा।

"बस इम्तिहान देते वक्त अपनी जगह से उठकर एग्जामिनर से कहना कि सर फलाना क्वेश्चन नम्बर गलत है। तो तुम उसी वक़्त श्राप से मुक्त हो जाओगे।" रोहित ने धीमी मुस्कान के साथ मोहित की और देखते हुए कहा था।

" साले! पूरा टाइम खा गए। चलो क्लास में एंटर करने का बेल हो गया है।" मैंने खीझते हुए कहा।

*****

कक्षा में प्रवेश करते ही रोहित ने अपना रोल नंबर ढूंढा और अपनी जगह पर जा कर बैठ गया। थोड़ी देर में ही वो अपने पॉकेट से पर्ची निकालकर डेस्क पर बहुत महीन लिखने लगा। क्लास के सारे लड़के- लड़कियां उसे अवाक होकर देख रहे थे; मगर वो उन सबसे लापरवाह डेस्क पर लिखने में लगा रहा। उसकी इस अजीब सी हरकत को करते हुए मुझे देखा न गया और मैं उसे ऐसा करने से रोकने के लिए उसके पास पहुँच गया और मैंने कहा-

"क्या कर रहा है रोहित? सब हंस रहे हैं यार!"

"तो हँसने दे ना भाई। तू देखना लास्ट मिनट में सबका टेन्शन रिलीव हो जाएगा और जा तू अपने नोट्स देख ले। मुझे डिस्टर्ब मत कर।"

रोहित ने सिर उठाये बगैर ही कहा था।

रोहित की बात सही थी। मैं वापिस अपनी जगह पर बैठ कर रिवीजन में लग गया जो ठीक उसके बाजू वाली डेस्क के बाद ही थी। लगभग पांच मिनट ही बीते होंगे कि अचानक ममता भी उसी कमरे में आ गई। विधि का विधान भी देख कर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसकी सीट मेरे ही डेस्क पर साथ मे थी। ममता धीमी सी मुस्कान छोड़ती हुई मेरी बाईं तरफ बैठ गयी और रोहित की उस हरकतों को गौर से देखने लगी। रोहित, ममता के बिल्कुल बाजू वाले डेस्क में ही बैठा था।

अभी ममता को बैठे कुछ देर ही हुआ था कि रोहित फर्रे को डेस्क पर जहां जगह मिली; लिखकर निश्चिन्त हो गया। दोनो हाथों की पांचों उँगलियों को फंसाकर चटकाया और एक लंबी अंगड़ाई ली।

रोहित को अनदेखा कर मैंने अपनी नजरें नोट्स पर गड़ाईं; मगर तब तक देर हो चुकी थी। टीचर आ चुके थे। कॉपी और सील्ड क्वेश्चनस पेपर उन्होंने मेज पर रखा और अपनी घड़ी पर देखते हुए बोले-

"Please your books , notebooks etc outside the class."

उनके इतना कहते ही हम सब अपने अपने नोट्स और बुक्स क्लास के बाहर रखने लगे। तभी रोहित अपनी जगह से उठा और उसने टीचर से कहा-

"सर मेरे डेस्क पर कुछ- कुछ धुंधला सा लिखा हुआ है। प्लीज! मेरी सीट चेंज कर दीजिए।"

" जैन्टलमैन, डेस्क आपके रोल नम्बर के मुताबिक लगाया हुआ है। वह बदला जाना उचित नहीं होगा; वैसे भी पूरे साल आप लोग डेस्क ग्राफिफ्टी ही तो करते हैं। जस्ट इग्नोर इट एंड सीट डाउन। औऱ हां अगर कोई नोट्स है तो पहले वह बाहर रख आइए।" इनविजिलेटर ने कहा।

"नहीं सर मेरे पास पेन के अलावा कुछ भी नहीं है।" रोहित ने कहा।

"OK. Sit down then. I have to distribute the paper."

इनविजिलेटर ने कहा।

" ओके सर।" रोहित ने बैठते हुए राहुल गांधी की तरह आंख मारी जैसा कुछ दिन पहले पार्लियामेन्ट में मोदी जो को देखते हुए मारी थी। रोहित का काम हो गया था। वह जानता था कि टीचर ने तो डेस्क बदलेंगे न ही उसकी जगह। इस तरह डेस्क को बदलने को कहकर वह इस बात से निश्चिन्त हो गया था कि अगर परीक्षा देते वक्त टीचर ने डेस्क पर लिखा देख लिया तो क्या होगा? मुझे उसके दिमाग का कायल होना पड़ा।

परीक्षा शुरू हो गयी थी। मुझे आठ सवालों में से बमुश्किल सिर्फ चार ही आ रहे थे। मैंने यह सोचकर लिखना शुरू किया कि शायद चार सवाल करते-करते पांचवां याद आ जाए। एग्जामिनेशन हॉल में मिनट की सुई सेकंड्स की तरह चलने लगती है और इसका पता तब लगता है जब आप दूसरी बेल के लगते-लगते भी तीसरे सवाल में अटकें हों। दूसरे बेल लगते ही कमरे में खलबली मच गई। मैं जल्दबाजी में तीसरा सवाल निपटा ही रहा था कि तभी रोहित की आवाज आई-

"Sir can I attempt all eights questions?"

राहुल की यह बात सुनकर टीचर समेत पूरी क्लास उसे देखने लगी। कुछ की हँसने के साथ फुसफुसाती आवाज भी सुनाई दी। ममता जो ठीक मेरे बगल में बैठी थी उसको टकटकी लगा कर देखती ही रह गई।

"No You have to attempt only five out of eight."

इनविजिलेटर ने प्रश्नपत्र देखते हुए कहा।

"लेकिन सर मेरे पास वक़्त है और मुझे सब आता है। मैं सब बना देता हूँ। आप कोई भी पांच चेक कर लीजिएगा।" रोहित ने तंज कसते हुए कहा और आगे भी जारी रहा।

"शटअप! या तो अपनी कॉपी कॉपी जमा कर के बाहर जाइये या फिर बैठकर आंसर्स रीवाइज कीजिए।" टीचर ने इस बार डांटते हुए कहा था।

" बताइये तो, मेरिट की कोई क्रेडिट ही नहीं है।" फुसफुसाते हुए रोहित अपनी सीट पर बैठ गया। उसने फिर मेरी तरफ देखते हुए राहुल गांधी की स्टाइल में आंख मारी। मुझे पता था कि रोहित टीचर से मस्ती कर रहा है। लेकिन रोहित को देखते ही मुझे पांचवें सवाल का जवाब मिल गया। मैंने उठकर टीचर से कहा-

"Sir, I think question number 3 is wrong." इससे पहले की टीचर किसह कहता राहुल ने टांग अड़ाई, "सारे क्वेशचन सही हैं।"

"आपसे किसी ने पूछा?" टीचर ने गुस्साते हुए कहा।

"बट सर, मुझे सारे सवाल आते हैं।" रोहित ने फिर खिंचाई की।

"Shut up and don't disturb others." टीचर ने रोहित से कहा और फिर मुझसे मुखातिब हुआ। "मैं कंसर्न टीचर को कॉल लेता हूँ, वो आपका डाउट क्लियर कर देंगे।"

"ओके सर।" मैंने कहा और बैठ गया। मैं अभी लिखने के लिए कलम उठा ही रह था कि रोहित की आवाज ने मेरा ध्यान खींच लिया।

"Sir, may I go to toilet." रोहित ने कहा।

"आप पेपर दे कर घर भी जा सकते हैं।" टीचर ने खीझते हुए कहा। "नो सर! अभी रिविजन बाकी है।" रोहित ने कहा और टॉयलेट चला गया। टॉयलेट से आते समय उसने मेरी आँखों मे देखा मैं समझ गया था कि मेरे पांचवे सवाल का जवाब रोहित टॉयलेट में छोड़ आया है। मैंने अगले दस मिनट में चौथे सवाल का जवाब पूरा किया और टीचर से परमिशन ले कर टॉयलेट गया। रोहित ने टॉयलेट के फ्लश टैंक पर जमी धूल पर ही उंगलियों से ही बेन्डिंग डायग्राम कर्व के ग्राफ बनाकर उसे संकेतों में समझा भी दिया था। यह सवाल तो वैसे बहुत ही आसान ही था मगर परीक्षा के

दबाव में आसान सवाल ही छूट जाते हैं। आखिरी सवाल के जवाब को बुरी तरह जेहन में रखते हुए और संकेतो को रटते हुए जैसे ही एग्जामिनेशन हॉल में दाखिल हुआ; मैं कुछ देखकर हक्का-बक्का रह गया। मैंने देखा कि रोहित कॉपी करते ध्यान ही नही रह और लिखने के दौरान एक पर्ची उस से नीचे गिर गई थी। वो पर्ची रोहित से थोड़ी दूर और ममता के पाँव के करीब आ गई थी। यह बिल्कुल उसी जगह गिरा था जहां इन्विजिलेटर चक्कर लगा रहे थे। पीछे मुड़ते ही टीचर की नजर उस कागज पर गई। टीचर ने उस कागज को देखते हुए रोहित की और देखा; लेकिन कागज ममता के नजदीक थी इसलिए उसने ममता से पूछा-

"What is this?"

रोहित कागज देखते ही सारी बात समझ गया। उसने एक पल को ममता की और देखा फिर कहा-

"देखने से तो कागज लगता है सर। बट आप पूछ रहे हैं तो दीजिए देखकर बताऊँ।" रोहित की बात पर सभी हंस पड़े।

इस बार टीचर ने गुस्से से तमतमाते हुए कहा- "शटअप, बस अब बहुत हो गया।"

ममता से फिर टीचर ने उस पर्ची के बारे में पूछा। इस से पहले की ममता को वो टीचर कुछ कहता मैं अपनी जगह पर खड़ा हो गया और उस पर्ची का झूठा इल्जाम अपने सर पर लेते हुए अपनी अपनी आंसर शीट उनके टेबल पर रखते हुए बाहर निकल आया। करीब बीस मिनट के बाद एग्जाम खत्म होते ही ममता मुझे ढूंढते ढूंढते मेरे करीब आयी।

" आय एम रियली वेरी वेरी सॉरी देव! एक्चुअली वो मेरी पर्ची नहीं थी।" आत्मग्लानि भरे स्वर में नजरें झुकाती हुई ममता बोली।

"मुझे पता है तुम ऐसा नहीं कर सकती, मुझे पता है हो न हो वो पर्ची रोहित की ही थी।" मैंने मुस्कुराकर दिलासा देते हुए उसे कहा।

इतने में रोहित भी मुझे ढूंढते ढूंढते वहां आ पहुँचा था। मेरी पीठ पर हाथ से थपथपाते हुए बोला-

"गजब त्याग करते हो देव बाबू।"

"क्या हो गया भाई"? मैंने सब जानते हुए भी जानबूझ के कहा।

"तुम जानते नहीं हो क्या वो पर्ची मेरी थी, जो गलती से गिरकर ममता के पास चली गयी थी।" उसने अचरज भरे स्वर में कहा।

"जनता हूँ।" मैंने कहा।

"तो तूने उसका इल्जाम खुद पर क्यों ले लिया बे?" इस बार ऊंचे स्वर में रोहित न कहा।

"साले! अगर एग्जाम खत्म होने वाला नहीं होता न तो वो विवेक पाण्डे (टीचर) बाहर निकाल देता तुमको। पूरा सेमेस्टर वेस्ट हो जाता।" मैंने कहा।

"वेस्ट नहीं; इन्वेस्ट किये हैं भाई। इसीलिए तो तुम जैसे दोस्त पाए हैं।" मुझे गले लगाते हुए उसने कहा।

"Dev is daring man. But Rohit cheating in exams are not good . By the way you are best friends." ममता ने अपना हाथ आगे बढ़ाते हुए कहा।

हेलो ममता, एक्चुअली मैं कॉलेज के फुटबॉल टीम में होने की वजह से क्लासेस कम अटेंड कर पाता हूँ, इसलिए मुझे मजबूरी में कभी कभी ऐसा करना पड़ जाता है और इसलिए तुम मेरा नाम भी नहीं जानती होगी और ये मुझसे जलता होगा इसलिए इसने तुम्हें मेरा नाम नहीं बताया होगा।" रोहित ने मेरी तरफ इशारा करते हुए कहा।

"No, not like that. Infact I know you." ममता ने कहा।

"Great ! तो कॉफ़ी पीने कैंटीन चलें? रोहित ने सीधे कहा।

"Excuse me!" ममता ने चेहरे पर बिखरे बालों को कान के पीछे करते हुए आश्चर्य से कहा।

"Don't worry. मैं दिन में कॉफ़ी नही पिता।" मैंने मामला बिगड़ता देख कर कहा।

"और मैं रात में कॉफ़ी नहीं पीती।" ममता ने शेखी से कहा।

"फिर तो जम जाएगी अपनी।" मैंने ममता की आंखों में एकटक देखते हुए कहा। हम तीनों कॉलेज की कैंटीन की तरफ रवाना हो चले थे। वहां कुछ वक्त साथ बिताए और फिर हम सभी अपने अपने घर की तरफ लौट गए थे।

आज सेकण्ड ईयर का रिजल्ट आने वाला था। मैं कभी भी अपना रिजल्ट नहीं देखता था, मेरे अंदर कभी इतनी हिम्मत नहीं होती थी। मेरे दोस्त ही मुझे देख कर बताते थे। तभी अचानक मेरे सामने ममता आती है और कहती है-" कॉन्ग्रेट्स देव!" तुमने इस साल कॉलेज में टॉप किया है।" यह सुनते ही मैं खुशी में इतना चूर हो गया कि अपने दोनों हाथों को बढ़ाकर उसको गले लगा लेता हूँ।

"ओहहो सॉरी! आय एम रियली वेरी वेरी सॉरी। मैं भावनाओ में बह गया। एक्चुअली मेरा सपना था कि मैं कॉलेज में किसी वर्ष टॉप करूँ।" मैंने डरते हुए और पछतावे के साथ कहा।

"ईट्स ओके डियर! आए कैन अंडरस्टैंड।" उसके ऐसा कहते ही मैं सामान्य हो गया। फिर उसने मेरा ध्यान हटाते हुए कहा-"तो बॉस पार्टी तो बनती है! बोलो क्या कहते हो?" उसके इतना कहते ही मेरे बाकी के तीनों दोस्त आ जाते हैं, और मोहित तपाक से कहता हैं- " भाइयों पार्टी....पार्टी तो आज डबल बनती है इस बार।"

"डबल पार्टी मैं कुछ समझी नहीं" ममता बोली।

"जी भाभीजी" ऐसा कहते वो तीनो वहां से चले गए।

अचनाक ऐसी बातें सुनकर मैं बिल्कुल सकपका कर रहा गया। मैंने तिरछी नजर से ममता की तरफ देखा तो वो मुस्कुरा रही थी। मैंने भी उसकी तरफ देखा और फिर आज मैंने भी स्माइल दे ही दी।

मेरे स्माइल करते ही वो मेरे करीब आई और मेरे बालों को सहलाते हुए बोली-"जब तुम हँसते हो तो बहुत प्यारे लगते हो! ऐसे ही हंसते रहा करो!" यह कहकर वो वहां से शर्माते हुए चली गई।

मैं थोड़ी देर वहीं खड़ा रहा और अपनी दोहरी सफलता पर फक्र महसूस करने लगा।

छुट्टी होते ही मैं बस में चढ़ा। आज मैं अपने मन से ही ममता के बगल में जा बैठा। आज वो कुछ नहीं बोल रही थी। पता नही उसे क्या हो गया था, वो लगातार अपने चेहरे को छिपती हुई स्माइल किए जा रही थी और मुझसे नजर बचा रही थी। थोड़ी देर जब वो नार्मल नहीं हुई तो मैंने उस से कहा- "सॉरी"

"सॉरी फ़ॉर व्हाट?" उसने इस बार कहा।

"अरे वो रोहित को ऐसा नहीं कहना चाहिए था।"

"ईट हेपेन्स डियर, डोन्ट ट्राय टू बी सीरियस।" वो यहकर हंस पड़ी।

उसके ऐसा कहते ही मेरे अंदर की झिझक निकल पड़ी। अब हमलोग दिन पर दिन घुलते चले गए। आपस की छोटी-छोटी समस्याओं से लेकर बड़ी से बड़ी खुशी एक साथ सेलिब्रेट करने लगे। कॉलेज आते ही मेरी नजरें सबसे पहले ममता को ही तलाशती थी, जब तक वो दिख न जाए मेरी क्लास में जाने की इच्छा नहीं होती थी। जिस दिन वो किसी जरूरी काम से कॉलेज नहीं आ पाती और सुबह मुझे नही दिखती तो मैं मन मारकर पहले लैक्चर में लाइब्रेरी में जा कर बैठ जाता। समय बहुत ही अच्छा कट रहा था। पिताजी ने मेरे पिछले तीन सालों में इस साल कॉलेज में सबसे अच्छे प्रदर्शन के कारण पल्सर बाइक ला कर दी। यह बाइक ब्लैक कलर में थी। 135 cc की इंजन के साथ 5 गियर वाली मोटरसाइकिल थी।

मैं इंजीनियरिंग के तृतीय वर्ष में अब कॉलेज इसी बाइक से आने जाने लगा था। मैं नई बाइक और दोस्तों के साथ ऐसी सुरूर में छाया की मुझे कुछ दिनों तक ममता का ध्यान ही नही रहा। मैंने नोटिस किया कि ममता पिछले दो हफ्ते से कॉलेज नहीं आई थी। मैं परेशान सा हो गया। मैंने उसको बहुत सारे कॉल किए लेकिन उसका कोई जवाब नहीं आया। एक दिन मैं उससे मिलने उसके घर जा पहुँचा। उसके घर वालों ने मुझसे पूछा तो मैंने उन्हें बताया कि मैं उसके कॉलेज में

ही साथ मे पढ़ता हूँ, और उन्हें बताया कि ममता के कॉलेज न आने जे उसकी उपस्थिति कम (शार्ट अटेंनडेंस) हो गई है जिसके कारण उसे परीक्षा में बैठने पर दिक्कत हो सकती हैं। उसके घर वालों ने मुझे अंदर बुलाया और मेरा शुक्रिया अदा करते हुए बोले कि जाओ बेटे ममता ऊपर के कमरे में ही है। मैं ममता कर कमरे में इंतजार कर रहा था अचनाक ममता ने मुझे घर पर देखते ही वो चौक गई। वो मुझे अपने कमरे में ले गई और बोली-" मान गए तुम्हारी हिम्मत को। तुम्हें किसी ने कुछ नहीं बोला।"

"अरे वो सब छोड़ो बताओ तुम इतनी दिनों से कॉलेज क्यो नही आ रही हो?" मैंने जल्दीबाजी में उस से कहा।

उसने बताया कि उसके दादाजी की मृत्यु हो गई और उनके क्रियाकर्म खत्म होते होते 15 दिन उधर गांव में ही लग गए। वो कल ही कुमाऊँ से आई है। उसने बताया कि उसके घर से आते ही मकान मालिक ने कमरे छोड़ने को कहा है। मकान मालिक के बड़े बेटे की अगले माह शादी है, जिस वजह से इस हफ्ते की मोहलत मिली है।

मैं उसकी बातें सुनकर हंस पड़ा। वो गुस्से से तमतमाए बोली- "आर यू क्रेजी? हमे यहाँ किराए पर कमरा नहीं मिल रहा और ऊपर से तूम इस तरह हंस रहे हो?

मैंने हंसते हुए उस से कहा- "माय डियर! प्रॉब्लम इज साल्व्ड।"

"वो कैसे?" उसने आधीर भाव से कहा।

" यार हमारे यहाँ जो किराये पर रहते थे वो पिछले हफ्ते ही चले गए। उन्होंने अपना घर बना लिया है इसलिए अब वो वहां शिफ्ट हो गए है। तुम अपने घर वालों से बात करो उन्हें बताओ कि शास्त्रीनगर में खाली है किराए के लिए। सबसे अच्छी बात की वहां से कॉलेज भी काफी नजदीक हो जाएगा और यहां से मैन मार्किट भी समीप है।" मेरे इतना कहते ही ममता की माँ चाय ले कर आ गई। ममता ने उन्हें जारी बात बता दी। उसकी मां ने कहा-" शुक्रिया बेटे! हम कल शाम ही गांव से आए हैं, और यहाँ पहुँचते ही अलग परेशानी खड़ी हो गयी थी लेकिन तुमने हमारा बहुत बड़ा काम कर दिया।"

मैंने आंटी को समझाया फिर अपने घर वापिस आ कर घर वालों से बात कर ली। मेरे घर वाले भी तैयार हो गए। अगले दिन ही ममता के घर वालों ने हमारे यहां शिफ्ट कर लिया। मैंने भी अगले दिन कॉलेज से छुट्टी ले ली और उनके सामान इधर उधर रखवाने में भी खूब मदद की। मेरे इस हेल्पिंग नेचर से ममता के घरवाले बहुत प्रभावित हुए। देखते ही देखते ममता के घर वाले मेरे घर वालो से घुल मिल गए। अब मैं और ममता एक साथ ही मेरी बाइक से कॉलेज जाते थे। मुझे अपने दोस्तों के साथ घूमे हुए भी बहुत दिन हो गए थे। मैं और ममता लगभग हर जगह साथ ही जाने लगे थे।

वो मेरे सारे असाइनमेंट्स खुद करती थी, चाहे उसके लिए उसे पूरी रात क्यों न जागना पड़े। मेरी प्रैक्टिकल्स फाइल्स भी उसकी वजह से वक़्त से पहले ही पूरे हो जाते थे। हम दोनों में इतनी अच्छी बनती थी कि वो मेरी आँखों मे ही देख कर मेरे दिल के भाव समझ लेती थी और मैं उसके चेहरे के भाव देख कर उसके दिल की बातें समझ लेता था।

आज 29 जनवरी 2009 का दिन था। धनौल्टी में पिछली रात ही स्नो फॉल(बर्फ बारी) हुई थी। कॉलेज जाते वक्त उस दिन ममता ने दूर से ही धनौल्टी के नजारे देखते हुए कहा कि उसका भी मन होता है कि इस रोमांटिक मौसम में ऐसी वादियों का का मजा ले, और उन्हें छू कर करीब से महसूस करे। उसकी बात सुनते ही मैंने कॉलेज जाते वक्त बीच रास्ते से ही बाइक मोड़ दी। उसने ऐसा करते देख मुझसे पूछा अरे ये किधर जा रहे हो? मैंने उससे कहा कि बस चुप रहो तुम्हारे लिए सरप्राइज है। वो थोड़ी देर के लिए सोच में पड़ गई। जब उसकी नजर रास्ते के किनारे मील के पत्थर पर पड़ी जिस पर लिखा था धनौल्टी 45 की.मी. तो खुशी से झूम उठी और बोली-"यू आर सो क्यूट यार।" उसने बाइक पर बैठे बैठे मुझे पीछे से अपने दोनों हाथों से आलिंगन करते हुए जकड़ लिया और अपने सर को मेरे पीठ पर टिका दिया। मैं भी रोमांचित हो गया और जोश जोश में बाइक की स्पीड और बढ़ा दी। वो बहुत खुश थी, आज हमलोगों ने पहली बार कॉलेज बँक किया था। हम दोनों करीब 1 बजे दिन में ही धनौल्टी पहुँच गए थे। चारो तरफ बर्फ की सफेद चादर सी बिछ रखी थी। बहुत ही खूबसूरत नजारा था। चारो तरफ नजारे को देखने से ऐसा लग रहा था जैसे हम प्रकृती के गोद मे थे। ममता अपने दोनों हाथों को बार बार मल रही थी और अपने गालों के पास ले जा रही थी, शायद उसे ठण्ड लग रही थी। मैंने उसे कहा कि चलो सामने वाले रेस्टुरेंट में कॉफी पीते हैं। कॉफी का नाम सुनते ही उसने फिर से वही जादुई स्माइल कर दी

जिसका मैं अब कायल हो चुका था। हम दोनों रेस्टुरेंट में बैठ गए और मैंने ममता की फेवरेट कैपिचिनो आर्डर कर दिया। थोड़ी देर में कॉफी आ गई और हम दोनों चुस्की लेते हुए बाहर खिड़की से प्रकृति के नजारों में खो गए। अभी कॉफ़ी का सिलसिला चल ही रहा था कि मैं अचनाक उठा और रेस्टुरेंट के एक वेटर के कान में कुछ कह कर वापिस आ कर बैठ गया।

ममता ने मुझसे पूछा- " अरे देव क्या हुआ? तुम अचानक से क्यो उठे और उसके कान में ऐसा क्या कहा कि उसने तुम्हें स्माइल दी। मैंने कहा- "अरे तुम्हारे अंदर धैर्य नाम की भी कुछ है कि नही। मैंने सुबह तुमसे कहा था न कि कुछ सरप्राइज है तुम्हारे लिए।"

"ओहह मुझे सरप्राइज के लिए इंतजार नहीं होता, ये मेरी कमजोरी भी रही है। प्लीज जो भी है जल्दी करो और इस राज से पर्दा हटाओ अब।"

उसने ऐसा कह और फिर कॉफ़ी खत्म करने लग गई।

ममता के कॉफ़ी खत्म होते ही मैंने वेटर को इशारा किया और ममता के पीछे जा कर मैंने उसकी आंखों को ढक लिया और बोला- "प्लीज क्लोज योर आईज फ़ॉर फ्यू सेकंडस।"

थोड़ी देर में ही वेटर ने मेज पर कुछ सामान रखा और वापिस अपनी जगह चला गया। मैंने धीरे धीरे ममता की आंखों से अपने हाथों को उठाया और उसे आंखे खोलने को कहा। ममता की नजर जैसे ही सामने मेज पर पड़ी, उसकी आँखों से आंसू बहने लगे जो खुशी के थे। उसे पता नही अचनाक क्या हुआ वो अपनी जगह से खड़ी हुई और उसने मुझसे गले लगते हुए एक चुम्बन मेरे होठों पर अंकित कर दिए।

"ओह माय गॉड, टुडे आए एम सो हैप्पी, यू आर रियली माय बेस्ट हबी"। इस तरह की पता नही क्या क्या शब्द बोल गई। वो भवनाओं में बह गई थी। मैंने थोड़ी देर बाद उसको अपनी बाहों से जुदा किया और उसके आंखों से आंसू पोंछते हुए उसके हाथ मे प्लास्टिक का चाकू दिया। उसने केक को काटते ही....

हैप्पी बर्थडे टू यू... हैप्पी बर्थडे टू डियर ममता....हैप्पी बर्थडे टू यू।

मेरे इस शब्द से वहां धनौल्टी का पूरा वातावरण गूंज उठा था। ममता ने केक काटा और सबसे पहले मुझे खिलाया और फिर मैंने उसी टुकड़े को उसको खिलाया। उज़की आंखों से खुशी की धारा अभी भी बह रही थी। थोड़ी देर बाद अपने भावनाओं और नियंत्रण करते हुए उसने कहा कि-"आज तक मुझे इतना अच्छा सरप्राइज किसी ने नही दिया था। मुझे यह सरप्राइज बहुत पसंद आया। मैं इसे ज़िन्दगी भर याद रखूंगी।"

वैसे तो मैंने ममता को हमेशा खुश ही देखा था लेकिन उसे देख कर लग रहा था कि आज उसका मन और दिल दोनो खुश है। हमदोनो ने वहां एक दूसरे के साथ काफी वक्त गुजारे और एक साथ बहुत सारे छायाचित्र भी लिए। वापिस जाते वक्त हल्की हल्की बारिश भी हो गई थी। ममता को ठण्ड लग रही थी, मैंने उसे अपना जैकेट दिया तो सो मना करने लगी। फिर मैंने जब हक़ से कहा कि इसे उसे पहनना ही होगा तो उसने मुस्कुराते हुए ले लिया। एक तो बारिश और ऊपर से ऐसी ठंड ममता ने अपनी टांगी को बाइक के दोनों ओर कर लिया और मुझे पीछे से कसकर पकड़ लिया। मुझे भी अब थोड़ी थोड़ी गर्मी का एहसास हुआ। हम दोनों भीगकर उस दिन घर पहुचे थे। ममता को अगले चार दिनों तक जुकाम रहा था। मैंने चार दिनों में 4 केमिस्ट से बदल-बदल कर उसे दवाईयां दी थी कि किसी का तो उसपर असर पड़े। अंततः उसकी सर्दी और जुकाम चौथे रोज शाम तक चली ही गयी थी। मेरे इस फिक्र और ज़िम्मेदारी को देख कर वो बहुत ज्यादा प्रभावित हुई थी।

हमलोग अब इंजीनियरिंग के फाइनल ईयर में थे। ममता का प्लेसमेंट टाटा मोटर्स में ग्रेजुएट इंजीनियर ट्रेनी के पद और हुआ था। मैंने भी काफी कम्पनियों में कोशिश की लेकिन अंततः किसी भी कंपनी में चयन नही हो पाया था। अप्रैल महीना का अंतिम हफ्ता चल रहा था और अंतिम वर्ष की परीक्षाएं भी खत्म हो चली थी। परीक्षा खत्म होने के बाद ममता ज्यादा व्यस्त चल रही थी क्योकिं ममता को 13 जून 2009 को पंतनगर में टाटा मोटर्स जॉइन करनी थी।

एक दिन मैं ममता को अपने साथ ले कर एक रेस्टुरेंट में गया और उसके नाजुक हाथों को थामते हुए बोला- "ममता मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूं। पता नहीं तुम मेरी बातों को सुनकर क्या प्रतिक्रिया दोगी? लेकिन अगर आज मैंने यह सब नहीं कहा तो मैं ज़िन्दगी भर खुद को कोसता रहूंगा।"

ममता ने कुछ नहीं कहा बल्कि उनसे अपनी पलकों को झपकाते हुए मुझे आगे कहने की अनुमति दी।

मैंने ममता की हाथों को थामे हुए बोला- "देखो कहना तो मैं बहुत पहले ही चाहता था लेकिन मैंने हमेशा अपने आप को इस से दूर रखा, लेकिन मुझे इस चीज़ का एहसास तभी हुआ कब तुमने मुझे पहली बार किस किया था। आई थिंक आय एम इन लव विद यू। मैंने कहते हुए उसके हाथों को चूम लिया था।"

मेरे ऐसा करते हुए उसने झटके से अपने हाथों को मेरे हाथों से मुक्त करवाया और बोली- " देव मैं तुम्हारे जज़्बातों की कद्र करती हूं लेकिन मैंने तुम्हें हमेशा एक अच्छा दोस्त ही माना है। मैं यह मानती हूं कि तुम्हारे साथ ज़िन्दगी के सबसे अनमोल तीन साल कब और कैसे कट गए, इसका बिल्कुल भी एहसास नही हुआ। मुझे तुम्हारे जैसे दोस्त की कमी हमेशा खलेगी।"

ऐसा कहते हुए उसकी आंखों में आंशू छलक उठे थे।

मैंने उससे कहा- "फिर वो उस दिन जब मेरे दोस्तों ने तुम्हे भाभी कहा तो तुमने उनका विरोध क्यों नहीं किया बदले में तुम मुस्कुरा क्यो रही थी?"

ममता- "देखो कॉलेज में तो ऐसी घटनाएं तो होती रहती हैं। कॉलेज में आये दिन कोई न कोई हर किसी को कुछ न कुछ कहता ही रहता है। भला हम लोग किसी किसी को जवाब देते रहे। इसलिए कभी खामोशी जो काम कर जाती है वो काम बड़े बड़े बहस से भी नहीं हो पाते।"

मैंने कहा- "तो फिर उस दिन क्या था जब मैंने तुम्हें,तुम्हारे जन्मदिन वाले दिन सरप्राइज दिया था तो तुमने मेरे होठों पर किस किया था? क्या वह भी छलावा था या....?

"देखो इनसब बातों का जवाब देना मैं ज़रूरी नहीं समझती। आखिर मैं तुम्हे किस बात की सफाई दूँ।" ममता के ऐसा कहते ही आंखों से आंसू के बहाव और तेज हो चले थे और वो ऑटो पकड़ कर घर जा चुकी थी। मैं वहां मूक होकर काफी देर खड़े-खड़े उस तरफ देखता रहा था जिस तरफ से वो गई थी क्योकिं मुझे अब भी लग रहा था कि वापिस आ कर हंसते हुए कहेगी कि देखा सरप्राइज देना मुझे भी आता है।

मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा था की आखिर ऐसा कैसे हो सकता है। मुझे पूरा यकीन था कि वो मुझे ही प्यार करती है, जरूर कुछ मजबूरी रही होगी तभी उसने ऐसी प्रतिक्रिया दी। मैंने अपने आपको संभालते हुए बाइक स्टार्ट की और रोहित के घर चल पड़ा। आज मेरा घर जाने को मन नही हो रहा था। जंग में हारे हुए राजा की तरह मेरा हाल था जिसे हारने के बाद ज़िन्दगी क्षमादान में मिली हो। मैंने रोहित को अपनी सारी बात बताई। उस भी मेरी बातों का यकीन नहीं हुआ। उसने भी मुझे दिलासा दिया कि कुछ दिन खुद को संभाल सब ठीक हो जाएगा। मेरे दिल और दिमाग पर काबू नहीं था। मैं समझ नही पा रहा था कि अब मुझे क्या करना चाहिए।

मैं उस शाम रोहित के यहां चला गया और रात उसी के साथ रुक गया। मेरा दिल न तो कुछ खाने को न ही पीने को कर रहा था।

अगली सुबह तो और भी चौकाने वाला था, जब मैं सुबह घर पहुंचा तो मुझे पता चला कि उसका परिवार हमारा घर छोड़ कर चन्द घण्टे पहले ही कहीं दूर चला गया था था। यह सुनकर मैं बिल्कुल ही पागल सा हो उठा था। मेरे धैर्य की सीमा टूट चुकी थी। मैं अपने आपको बिल्कुल ही अकेला महसूस करने लगा।

मैंने सोचा था कि सुबह घर पहुँचकर उससे औऱ उसके घरवालों से शान्त मन से बात करूंगा परन्तु कुछ घण्टे पहले ही बिना मुलाकात के ही वो मेरी नजरो से ओझल हो चुकी थी। मैंने उसको बहुत फोन किये लेकिन न तो उसने रिसीव किये ना ही कोई मैसेज किया।

मैंने उसके बारे में जानने की बहुत कोशिश की लेकिन उसकी कोई खोज खबर नहीं मिल पा रही थी यहां तक कि मैंने अपने घर वालों से भी पूछा लेकिन उनलोगों की कोई प्रतिक्रिया देखने को नही मिली।

फिर एक दिन मुझे किसी तरह पता लगा कि वो अपने गांव कुमाऊं गई है। मैंने उसी शाम वहां जाने की बस पकड़ ली। तकरीबन 28 घण्टो की लगातार सफर के बाद मैं उसके गांव पहुंचा। मेरे गाँव पहुँचते ही उसकीं किसी सहेली ने उसको बता दिया कि मैं उसके गांव आया हूँ। ममता ने इतने दिनों से कोई भी कॉल नहीं किया था लेकिन उसने आज मुझे कॉल किया और कहा कि गांव के पास शिव जी का मंदिर है वहां से कुछ दूरी पर गदेरा (झरना) है वहां वो सुबह ठीक 4:00 बजे मिले। तब तक वो एक रात उसके गांव में उसके चचेरे भाई के यहां रुके। उसने अपने भाई की पूरी जानकारी दे दी थी।

मैंने पूरी रात उसके बारे में ही सोच कर करवटे बदल रहा था कि कल मिलेगी तो ये कहूंगा वो कहूंगा और उसको अपने साथ इस जगह से बहुत दूर ले जाऊंगा, जहां हमे कोई भी नहीं जानता हो। पूरी रात तो मैं सो नहीं पाया जिस वजह से मैं सुबह साढ़े तीन बजे ही उस जगह पहुँच गया और उसका इंतजार करने लगा। ठीक चार बजे मुझे ममता एक लड़की के साथ आती हुई दिखी। वो सीधे आ कर मुझसे गले से लिपट लिपट कर रोने लगी।

लगभग 10-15 मिनट रोने के बाद जब उसका दिल हल्का हुआ तो वो बोली- " देव मुझे पता था तुम जरूर आओगे।"

मैं उसका जवाब देता उस से पहले मेरी नजर उसकी हथेली पर पड़ी जिस पर मेहंदी लगी हुई थी। जब मैंने उसकी हथेली को खोल देखा तो झटके के साथ पीछे हट पड़ा।

मैंने कहा- "ममता ये क्या? तुमने तो मुझे एक पल में ही पराया कर दिया।" उसके हाथों में दुल्हन की तरह मेहंदी रची थी और उस हथेली में ममता और राज का नाम अलंकृत था।

मेरी बात सुनकर बोली-"देव! मैंने हमेशा ही तुम से प्यार किया है और करती भी रहूंगी। क्योकि तुम जैसा प्यार करने वाला लड़का हर लड़की चाहती है, लेकिन यह तुम्हारा प्यार मेरे नसीब में नही।"

मैं बोला- "अगर प्यार था तो तुमने उस दिन मना क्यो किया और बिना बताए तुमने घर क्यो छोड़ दिया? कम से कम एक बार मुझे बताया तो होता। क्या तुम्हें अपने प्यार पर जरा सा भी विश्वास नहीं था?

ममता- "शायद लगता है कि तुम्हे भी वो बात पता नही चली।"

मैं - "कौन सी बात ममता? मुझे बतातो। प्लीज मुझसे कुछ मत छिपाओ।"

ममता-"देव! मैं तुमसे बेहद प्यार करती थी और काफी दिनों से मैं तुम्हारे सामने इजहार करने की सोच रही थी, लेकिन सही मौके का इंतजार कर रही थी। जिस दिन तुमने मुझे अपने दिल की बात बताई थी, उस दिन मैं बहुत खुश थी इसलिए मैंने उसी शाम यह बात अपने घर मे अपनी माँ को बताई थी। मेरी बात करने के दौरान मेरे पिता ने हमारी बात सुन ली और उन्हें बहुत ज्यादा क्रोध आ गया। बात इतनी ज्यादा बढ़ गयी कि तुम्हारे घर वालो से भी उनकी बहस हो गई। मेरे पिताजी ने बहसबाजी के दौरान कह दिया कि वो किसी बेरोजगार के साथ अपनी बेटी का पल्लू नहीं बांध सकते। जिस व्यक्ति को अपने कैरियर की परवाह नहीं है वो भला ज़िन्दगी में किसी को क्या खुशी देगा। जिसके जवाब में तुम्हारे पिता ने भी कहा कि -"हमें इस बात का बिल्कुल भी आभास नहीं था कि उनका बेटा देव ममता को पसंद करता है। अगर उन्हें पता होता तो वो खुद इस चीज़ की आज्ञा उसे नही देते।"

बात इतनी ज्यादा बढ़ गयी थी कि हाथा-पाई पर आ गयी थी। माहौल पूरी तरह बदल चुका था। उस रात तुम घर भी नही आये थे। रातों रात पिता जी ने गांव जाने का फैसले ले लिया और अगले दिन सूर्योदय होने से पहले ही मेरे पिता हमलोगों को लेकर अपने गांव आ गए। यहां आकर उन्होंने अपने दूर के रिश्तेदार के बेटे जो की इंडियन एयरफोर्स में पायलट है उस से मेरी शादी तय कर दी। सब इतना जल्दी हुआ कि मेरे कुछ समझ नही आ पाया। मैं लाख विरोध करने के अलावा कुछ भी कुछ कर नहीं पाई। मैंने खुद को बेबस और लाचार ही पाया लेकिन देव मैं इतना जानती हूं कि मैं तुमसे जुदा होकर बिल्कुल भी नही रह सकती। मैंने तुमको यहां हर पल मिस किया है। मेरी आज शाम को ही शादी है लेकिन यह देखो मैं आने सारे समान के साथ आई हूं। प्लीज मुझे यहां से दूर कही बहुत दूर ले चलो। मैं यहां अब नही रुकना चाहती क्योकिं मैं इस अन्जान व्यक्ति से शादी कर के पूरी ज़िंदगी घुट-घुट कर इस बेमतलब के रिश्तों का बोझ नही उठा सकती थी। मैं नहीं चाहती कि मेरे एक फैसले से तीन-तीन ज़िन्दगीयां बर्बाद हो। इसलिए अब देर मत करो मैंने अपनी सहेली के साथ मिलकर यहां से निकलने की सब तैयारी कर ली है।"

यह कहते ही अगले पल में ही ममता ने मेरा हाथ थाम लिया।

लेकिन मैंने उसके हाथ को छुड़ाते हुए और उस से अलग हो कर कहा- "क्या कहा आज शाम को ही तुम्हारी शादी है? ओह्ह लेकिन इस तरह से भागने से इसका इलाज नही होगा ममता। अचनाक भाग जाने से तुम्हारे पिताजी की ज़िंदगी भर की इज्जत मिट्टी में मिल जाएगी। वो फिर ज़माने में किसी से नज़रे नही मिला पाएंगे। उन्होंने 22 सालों तक तुम्हारी हर ख्वाइशों को पूरा किया है और बदले में उन्होंने मांगी भी तो तुम्हारी ख़ुशी के लिए अच्छा भविष्य दिया तो हम आज खुदगर्ज हो गए। मैं इतना बड़ा बुजदिल नहीं जो कि किसी को भगा कर ले जाऊं और तुम्हारे मां बाप को मजबूर कर के शादी करूँ। शादी करूँगा तो उनके सहमति से ही नही तो मैं ज़िन्दगी भर कुंवारा रह सकता हूँ। मेरा मानना है कि मोहोब्बत में चीज़े हासिल करने की नहीं बलिदान देने का ज्यादा महत्व है। नहीं ममता नहीं मैं इतना बड़ा खुदगर्ज नहीं हो सकता। नहीं नहीं मैं तुमसे शादी तभी करूँगा जब तुम्हारे घर वाले भी राजी हों और इसके लिए मैं पूरी ज़िंदगी इंतजार कर सकता हूँ।"

ममता-" तुमने यह कह कर मेरे दिल मे और भी इज्जत बढा दी है देव! हर लड़की चाहती है कि उसके पिता को भी उतना ही सम्मान मिले जितना वो अपने ससुराल में जा कर करती है। लेकिन तुमने यह बात कह कर आज मेरी नजरो में खुद को बहुत ऊंचा कर दिया। देव! मैं तुम्हारे इस फैसले का सम्मान करती हूं और तुम्हारी ज़िन्दगी भर इज्जत करूँगी।"

यह कहते कहते वो रोने लगी थी और आगे बढ़ कर उसने मुझे अंतिम बार होठों पर एक चुम्बन दिया और काफी देर गले से लगी रही। फिर थोड़ी देर में अचानक खुद को जुदा किया और वो अपनी मंजिल की तरफ बढ़ चली। जाते वक्त मैंने उसको पलट कर भी नही देखा, मैं नहीं चाहता था कि जाते वक्त उसकी मायूस शक्ल को देखूँ और आने वाली ज़िन्दगी में उस उदास शक्ल को याद कर के खुद को कमजोर करूँ।

मेरी उस से यह आखिरी मुलाकात थी उस दिन के बाद मेरी उस से फिर कभी मुलाकात नहीं हुई। लेकिन विधाता का खेल भी अजीब होता है, शादी के मात्र दो माह बाद ही वो विधवा हो गई। मिग 27 के उड़ान के दौरान इंजन में तकनीकी खराबी के कारण, विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया और उसने अपने पति को हमेशा के लिए खो दिया था। लभगभ पिछले छः सालों से वो उसकी विधवा बनकर अपनी ज़िंदगी से मशक्कत कर रही थी। कुछ समय बाद उसका मन हुआ था कि वो विवाह कर के अपनी नई जिंदगी की शुरुआत करे परन्तु विवाह होने के पश्चात उसका अपनी ज़िंदगी पर उसका अधिकार नही रहा था जितना कि उसके ससुराल वालों का उस पर। उसके ससुराल वालों ने उसे बताया कि भारतीय समाज मे विधवा बनकर सफेद लिबास में ही रहना था और एक विधवा की तरह सारे नियम का पालन करना था। उसने अपने अंदर के सारे जज्बात और इच्छाओं की कुर्बानी देनी पड़ी। मात्र दो महीने की शादी को उसे अब पूरी ज़िंदगी एक बंधन में डाल दिया था। एक विधवा को समाज के नाम पर उसे रीति रिवाज की रश्मो की बेड़ियां से जकड़ दिया गया था।

ममता ने दो दिन पहले मुझे फ़ोन कर के मिलने को कहा था। वो कुछ ज़रूरी बातें बताना चाह रही थी। हमे एक दूसरे से मीले हुए लगभग साढ़े पांच साल से ज्यादा वक्त हो चला था। मैं उसकी बातें सुनकर खुद को रोक नही पाया और उसके बताए हुए जगह पर वक़्त से पहले ही मिलने चला आया था। 20 साल की अल्प आयु में ही वो विधवा हो गई थी। आज पांच साल बाद वो मुझसे

मिलने आई थी लेकिन उसके जिस्म पर सफेद साड़ी बिल्कुल ही नहीं फब रही थी। उसके चेहरे से रौनक गायब थी और उसकी सुनी मांग उसकी बेबसी को बखूबी बयाँ कर रही थी। मैंने इतना लाचार और बेबस उसे कभी नहीं देखा था। मुझे उस पर तरस से ज्यादा उस विधाता के खेल पर गुस्सा आ रहा था कि आखिर वो किसी की किस्मत में इतने दुख कैसे लिख सकता है?

"सर डू यू वांट ऐनि थिंग मोर?"

वेटर की इस आवाज के साथ हमदोनो का ध्यान टूटा, जो अतीत के साये में हम बहुत दूर तक साथ चलते चलते अन्धकार के गर्त में पहुँच चुके थे।

ममता ने अपने आप को सम्भलते हुए कहा- "देखो देव मैं तुम्हारी भावनाओ की कद्र करती हूं, तुम्हें पति के रूप में जिस लड़की को मिलोगे वो इस दुनिया की सबसे भग्यशाली होगी। दुनिया की हर लड़की अपने प्यार से वो तीन मैजिकल वर्ड आई लव यू सुनना चाहती है देव...लेकिन आज हालात अलग हैं। आज मैं एक विधवा नारी हूँ, और हमारा समाज कभी भी किसी विधवा नारी को विवाह की अनुमति नही देता। विधवा को यह समाज कुल्टा की नजरों से देखता है और किसी भी शुभ कार्यों में न आने की अनुमति नहीं होती हैं।"

मैं गुस्से में आकर कहा- "तुम किस समाज की बात कर रही हो? इस समाज के कारण ही हम जुदा हुए, और यह न भूलो इस समाज ने हमे नफरत के सिवा दिया ही क्या है। समाज अपने नियम और कानून अपनी जरूरतों के हिसाब से बदलता रहता है। अब मैं इस समाज को नहीं मानता। तुम अगर आज भी हाँ कर दो तो मैं विवाह के लिए तैयार हूं और मेरा यकीन मानो हमारे इस नए कदम से इस समाज को हम एक नया आईना भी दिखएँगे और सीख भी प्रदान करेंगे और मैं हर मुश्किलों का सामना करने को तैयार हूं। चाहे हालात कैसे भी हो जायें लेकिन मैं तुम्हें ज़िन्दगी के सफर में कभी भी बीच राह में छोड़कर नहीं जाऊंगा, यह मेरा तुमसे वादा है।"

ममता- "बेमतलब की बातें मत करो। एक विधवा को यह सब शोभा नहीं देता। यह समाज हमे ताने देता रहेगा, मैंने अपनी ज़िंदगी मे बहुत उतार चढ़ाव देखे हैं। मैं खुद पर लगे इल्जाम लगे झेल सकती हूं लेकिन कल के दिन तुम पर कोई लांछन लगाए तो मैं बर्दाश्त नहीं कर पाऊंगी...देव! मैं बाकी की बची हुई ज़िंदगी तुम्हारी यादों के सहारे गुजार सकती हूं।"

उसकी बातों को धैर्यपूर्वक सुनने के बाद मैंने कहा- "एक बार तुम पहल कर के तो देखो,बाकी मैं तुम्हारे साथ तो हूँ ही। मेरी खातिर एक बार समझा कर देखो?"

इस बार ममता ने नम आंखों से कहा- "देव! याद रखना यदि बुरे लोग समझाने से समझ जाते तो 'बांसुरी बजाने वाला' कभी महाभारत होने ही नहीं देता।"

यह कहते ही ममता भावुक हो गई और अपनी जगह से खड़ी हो गई। वो अपने दिल के भावनाओ पर नियंत्रण नहीं रख पा रही थी। उसने वहां से एक ऑटो लिया और बैठ कर घर की तरफ निकल गई। मैं वहां काफी देर तक खड़ा यही सोचता रहा गया कि हमारा समाज आज भी कितना पिछड़ा हुआ है। यदि किसी पुरुष की स्त्री मर जाये तो उसे विवाह करने की पूरी आजादी है लेकिन यदि किसी स्त्री की पुरूष की मौत हो जाये तो उसे पूरी उम्र उसकी विधवा बनकर अपनी इच्छाओं और मर्जी को दबा कर उस पुरुष की विधवा बन कर ज़िन्दगी गुजारने के लिए विवश कर दिया जाता है जिसका की अब कोई वजूद भी नहीं रहा है। क्या किसी स्त्री को शादी के बाद इसकी इच्छाएं और विचार कुछ मायने नहीं रखती?

लभगभ 4 दिनों बाद ही मुझे एक औरत का कॉल आया- " देव! तुम जहाँ भी हो जल्दी से राजपुर रोड पर मैक्स अस्पताल आ जाओ।

मैंने पूछा- "आप कौन हैं और मुझे वहां क्यों बुला रहे हैं?

तो अगले पल ही ऐसा जवाब आया की मेरा दिमाग सुन्न हो गया था- "तुम्हारे लिए अभी यह जानना ज़रूरी नहीं कि मैं कौन हूँ बस यह जान लो कि ममता अपनी ज़िंदगी की आखरी जंग लड़ रही है।" मैं यह सुनते ही मेरे लिए फ़ोन पर दूसरी तरफ कौन है यह जानने का औचित्य नही रह गया था। मैं राजपुर रोड की तरफ निकल चुका था।

अगले ही कुछ पल में मैं मैक्स अस्पताल के 5वें सतह पर था। वहां मैंने देखा कि ममता का पूरा परिवार वहां मौजूद था और उन सभी की आंखें नम थी। मेरे वहां पहुँचते ही एक डॉक्टर आये और बोले- "मैंने आज तक कि पूरी ज़िंदगी मे इतनी धैर्यवान लड़कीं नहीं देखी। इसके जज्बे को मैं सलाम करता हूँ। लेकिन मैं बेबस हूँ चाह कर भी उसकी मदद नहीं कर पा रहा हूँ" इतना कहते ही उनकी नजर मुझ पर पड़ी और मुझे देखते ही समझ गए कि मैं देव हूँ उन्होंने मुझे तुरंत 6 वें सतह पर जाने को कहा जहां आई.सी.यू. था।

मैं भाग कर आई.सी.यू. मे पहुँच गया। वहां का दृश्य देखते ही मेरे रोंगटे खड़े हो गए। ममता वहां रोगी वाले बिस्तर पर पड़ी थी। उसके दाएं हाथ मे ग्लूकोज़ की पाइप लगी हुई थी और नाक के ऊपर ऑक्सीजन का फ्लास्क चढ़ा हुआ था। मुझे देखते ही उसने ऑक्सीजन का फ्लास्क हटा दिया और बैठने की कोशिश करने लगी। मैंने तुरन्त ही दौड़कर उसको सहारा दिया और उसके पीछे दो तकिए लगा कर उसको संतुलित करने की कोशिश करने लगा कि तभी वो मुझसे लिपट कर रोने लगी।

कुछ देर बाद मैंने उसको नियंत्रित किया और खुद से जुदा किया। उसके अलग होते ही मैंने उससे से पूछा कि उसे क्या हुआ है तो उसने बताया- "उसे पिछले 4 साल से कैंसर है और वो इस रोग के अंतिम चरण में है।"

उसकी यह बात सुनकर मेरे पाँव के नीचे से धरती गायब हो गई थी। मेरा चेहरा बिल्कुल ही मायूस हो गया था। मुझे अपने कानों पर विश्वास ही नही हो रहा था कि मैंने यह शब्द सुने थे।

उसने फिर कहा- "देव! मैं तुम्हे बहुत पहले ही बता देना चाहती थी, लेकिन मैंने सोचा कि इस से तुम पर बहुत गहरा असर होगा। लेकिन मैंने खुद के समझा बुझा कर तुमसे खुद मिलकर बताने की सोची। 4 दिन पहले जब मैंने तुम्हें मिलने को बुलाया था तभी मैं फैसला कर के आई थी कि

तुम्हे सब बता दूंगी। लेकिन तुम्हें देख कर मेरे अंदर हिम्मत नहीं आई कि मैं यह बात तुम्हें बता कर और मजबूर कर दूं।"

यह सुनते ही मैंने कहा-"वाह ममता वाह! आज तुमने जो सरप्राइज दिया इस से बड़ा सरप्राइज हो नही सकता? तुमने मुझे इतना गैर समझा कि इतनी बड़ी बात भी नही बता पाई। आज तुमने वाकई मुझे अकेला छोड़ दिया फिर से......

यह कहते ही मेरी आँखों मे आँसू छलक पड़े।

उसने मेरी आंसुओ को पोंछा और कहा- "देव! ज़िन्दगी कभी-कभी ऐसे इम्तिहान लेती है। कॉलेज के दिनों मैं जब मैं तुमसे मिली थी तब कई तरह के सपने मेरे जेहन में पलने लगे थे, लेकिन होनी को कुछ और ही मंजूर था। तुम्हें खुद को मजबूत करना ही होगा। कम से कम अपने लिए नहीं तो मेरे लिए ही सही। मैं जाते वक्त तुमको रोता हुआ नहीं देख सकती। इसलिए मेरी एक अंतिम इच्छा है कि मेरे वजूद के खत्म होने से पहले तुम एक अच्छी लड़कीं देख कर शादी कर लो।"

मैंने उसकी बातें सुनी और कहा- "ममता मैं एक वक्त लड़कियों से बहुत डरता था। क्योकि मुझमे कभी इतनी हिम्मत थी ही नही की किसी भी लड़की से अपनी दिल की बाते शेयर करूँ क्योकि मुझे पता था कि दिल टूटने की आवाज नहीं होती लेकिन इसके दर्द का एहसास पूरी ज़िंदगी तक रहता है।

अगर तुम मेरे साथ हो तो तब तक मुझे किसी की जरूरत नही है। लेकिन यह मत भूलो की तुम्हारे प्यार ने ही मुझमे बदलाव लाया है। तुम्हारी दोस्ती ने मुझमे भरोसा बढ़ाया है।

मैंने दोस्ती के बारे में सोचा था लेकिन कब ये प्यार में बदल गया इसका एहसास मुझे भी न हुआ। सच कहूं तो तुमसे दोस्ती के बारे में सोचा था लेकिन वो खुद प्यार बन के सामने आ गया। प्यार को चाहता था लेकिन वो सपना रह गया। सपने को ढूंढ रहा था तब तुम सामने आ गई।

प्यार दुख को दूर करता है। दूर के रिश्तों को पास लाता है।

सच तुम्हारे प्यार ने मेरे सारे दुखों को दूर कर दिया है।"

यह सुनते ही ममता ने मेरे होंठो पर एक जोरदार चुम्बन अंकित कर दिया और वो अगले कुछ क्षणों तक ऐसा करती ही रही जैसे उसकी जिंदगी का आखिरी पल हो और वो अपनी सारी भड़ास निकालना चाह रही हो। मैंने अपने आपको छुड़ाने की नाकाम कोशिश की लेकिन मैं छुड़ा नहीं पाया, अगले ही पल उसकी आवाजें फुसफुसाहट में बदली और फुसफुसाहट भारी साँसों में।

थोड़ी देर बाद उसने खुद को मुझसे जुदा किया और खुद पर नियंत्रण करते हुए बोली- ""बेमतलब की बातें मत करो देव! मैं जानती हूं कि तुम्हे मैं अपने फ्यूचर हस्बैंड के रूप में मानती थी, लेकिन हर कोई इतना शौभाग्यशाली नहीं होता कि अपने सपने को पूरा कर सके। हमारी किस्मत में इस जन्म मिलना नहीं लगता है देव! इस समाज मे एक विधवा होना पाप है। एक विधवा की अपनी सारी इच्छाओ को मारना होता है और सारे दकियानूसी रश्मो को निभाना होता है। इस समाज मे विधवा के लिए कोई सम्मान नही होता है उसे मरते दम तक हीन भावना से ही देखा जाता है। एक विधवा की ज़िंदगी तो कहने के लिए उसकी होती हैं लेकिन उसकी हर एक सांस को उसका गुलाम होना पड़ता है जिसका इस दुनिया मे वजूद है ही नहीं। मैंने पिछले पांच साल में खुद को बहुत तन्हा पाया है और मैं अब खुश हूं कि कुछ दिनों में मुझे इस ढोंग से मुक्ति मिल जाएगी। इसलिए तुम्हें मेरे प्यार के दीप को बुझा कर ज़िन्दगी में आगे बढ़ना ही होगा।"

मैं बोला- "ममता मंदिर में जलते दिए को हवा बुझा सकती है। मगर दिल मे जगाए हुए प्यार को कोई नहीं?"

ममता- "पंच बहुत अच्छे हैं लेकिन मेरे पास अब ज्यादा वक्त नही जो तुम्हारा साथ दे सकूँ देव!

मैं- "तुम बस सब्र रखो और हिम्मत करो ममता। सब ठीक हो जाएगा, मैं तुम्हें कुछ भी नहीं होने दूंगा। हमारा प्यार कामयाब होगा, यह मेरा वादा है तुमसे।"

ममता- "मेरी बात समझ में नही आ रही क्या? मेरा प्यार घड़ी के कांटो की तरह है। तुम्हारे साथ बिताए कॉलेज के वो 3 साल भी उसी तरह ही हैं। ज़िन्दगी भर का प्यार मेरे नसीब में नहीं है। क्या पता कुछ पल के बाद ही मेरी मौत हो जाये? इसलिए तुम मुझे भूल जाओ।"

यह कहकर ममता भावुक हो गई थी और अपने चेहरे को घुमा कर रोने लगी।

मैं बोला- "पीछे मुड़कर तुम अपनी आसुओं को मुझसे छिपा रही हो, लेकिन तुम औरों के साथ जैसी थी वैसी मेरे साथ तो नही थी। एक लड़की शादी से पहले किसी को लिप टू लिप किस नहीं करती, लेकिन ऐसा तुमने किया था। इसका मतलब तुमको अपने प्यार पर विश्वास के साथ साथ भरोसा भी था मुझ पर और अपने ऐतबार पर। तुम एक बार सोच कर तो देखो वो सब तुमने प्यार के लिए ही तो किया है। अगर ऐसा नही है तो एक बार अपने दिल पर हाथ रख कर पूछो खुद से, जवाब तुम्हें खुद मिल जाएगा।"

ममता- "पैमाना खत्म होने के बाद लोग उसको तोड़ देते हैं या कहीं छोड़ देते है। मैं एक विधवा हूँ और अब तुम्हारे काबिल नहीं हूं। अगर मैं बच भी गयी तो यह समाज हमे एक नहीं होने देगा देव! क्योकिं सारे कायदे, नियम और रश्मे औरतों को ही निभाने के लिए होते हैं। तुम जल्द से जल्द विवाह कर लो, और शायद यही अच्छा भी होगा।"

मैं- "देखो अगर ऐसा करना होता तो मैंने कबकी शादी कर ली होती। ये मत भूलो ममता की सच्चा प्यार ज़िन्दगी में बस एक बार ही होता है।"

ममता- "देव समझने की कोशिश करो। इन कांटो भरी राह ओर मत चलो।

मैं- "गुलाब का फूल भी तो कांटो में ही खिलता है ना ममता।

ये सब मुझे मत समझाओ। मैं तुम्हारा इंतजार अपनी आखिरी सांस तक कर सकता हूँ। मोहब्बत भी ज़िन्दगी की तरह होती है, हर मोड़ आसान नहीं होता और हर मोड़ पर खुशी नहीं होती, पर हम ज़िन्दगी का साथ नहीं छोड़ते तो फिर मोहब्बत का साथ क्यों छोड़े?"

ममता- "देव! समझने की कोशिश करो। मेरे दिल मे हमेशा तुम ही रहे हो, लेकिन आज हालात अलग हैं। जब मेरे पास वक़्त था तब इस समाज की दकियानूसी रश्मो में मुझे फंसा कर रख दिया गया था। मैंने लाख कोशिश की लेकिन इस समाज की छोटी सोच ने मेरे पाँव में बेड़ियां डाल दी थी जिस से मैं चाह कर भी आज तक मुक्त नहीं हो पाई और आज जब मेरे पास वक़्त नहीं तो अनायास ही दिल मे नई जिंदगी और इच्छओं को पूरी करने के उमंगे हिलोरे मार रही हैं। मुझे माफ़ कर देना देव! मैने तुम्हारा दिल दुखाया ज़रूर है लेकिन मैं इस समाज के आगे बेबस और मजबूर थी। मैं मरने के बाद भगवान से कामना करूंगी की अगले 6 जन्मों में तुम ही मुझे पति के रूप में प्राप्त हो।"

"नहीं मुझे नहीं पता अगले छः जन्मों में क्या होना वाला है? मैं तुम्हें इसी जन्म से ही एक पल भी अपनी नजरों से ओझल नहीं होने दूंगा।" मैंने अपनी अनायास ही निकल पड़े आशुओं को पोंछते हुए कहा।

"देव! मैं हमेशा तुम्हारे साथ रहूंगी। इस हवा की तरह, बस अपनी आंखें बंद कर के इस हवा को महसूस करना, तुम मुझे यहीं कहीं आसपास में ही पाओगे।"

यह ममता के अंतिम शब्द थे। वो मेरी बाहों में दम तोड़ चुकी थी। मैं उसको थामे उसे देखता ही रह गया था। मुझे अब भी विश्वास नहीं हो रहा था कि ममता इस दुनिया को छोड़ जा चुकी है। हमारी प्रेम कहानी इस समाज के द्वारा बनाये गए खुद के कायदे और नियम के बीच अधूरी रह गई थी। मैं यही सोचता रहा गया कि क्या इस समाज मे विधवा होना अभी भी अभिशाप है? मैं अपने आप से यह भी सवाल कर रहा था कि- हमारी ज़िंदगी इतनी मुश्किल क्यों बना दी गई है,

मैं बार बार यही सोच रहा था, यही खुद से पूछ भी रहा था। लेकिन जवाब...जवाब कहीं से नहीं मिला।

ज़िन्दगी ने मुझे एक नए मोड़ पर ला कर पटका था। मेरे जेहन के स्मृतियों में उसके सपने बुझे दिये कि तरह टिमटिमा रहे थे।